IJAER/ November-December 2023/Volume-12/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

आधुनिक महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में महिलाओं के भविष्य का एक अध्ययन

बीधाराम, अस्सिटेंण्ट प्रोफेसर (हिन्दी)

बजरंग पी जी कॉलेज, रूदावल

सारांश,नारी केंद्रित उपन्यासों में नारी अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। नारी को परिवार में और समाज में पढ़ी–लिखी होते हुए भी अनेक कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नारी जब पारिवारिक संघर्ष से ऊबकर प्रगतिवादी विचारधारा का अवलंबन करती है तो समाज उसे साथ नहीं देता। बल्कि उस पर लांछन लगाती है। फलस्वरूप नारी के चरित्रहीनता की समस्या निर्माण होती है। नारी को आर्थिक अभाव की समस्या के कारण नौकरी के लिए दर–दर भटकना पड़ता है। नौकरी न मिलने के कारण बेरोजगारी की समस्या निर्माण होती है। पुरुष उसे समान अधिकार नहीं देता। इससे उसे समान अधिकार की समस्या का शिकार होना पड़ता है। आजकल महिला उपन्यासकारों में ऐसे अनेक उपन्यासकार हैं जो नारीवादी चेतना को वहन करते हैं। नारी में जागृति की चेतना का संचार करने वाली महिला उपन्यासकारों में उषा प्रियंवदा, सूर्यबाला, शिवानी, कृष्णा सोबती, मृणाल पांडे, मालती जोशी, मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, मेहरून्निसा परवेज, प्रभा खेतान, कृष्णा अग्निहोत्री आदि प्रमुख हैं। इन उपन्यासकारों ने स्त्री की समस्या, संघर्ष और समस्याओं को नियति मानकर उसे स्वीकार करने वाली स्त्री, समस्याओं से मुक्ति के प्रयास तथा सफलता प्राप्त करने वाली स्त्रियों के विषय मे महिला उपन्यासकारों ने अपनी कलम चलाई है।

मुख्य शब्द, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, मेहरून्निसा परवेज, कृष्णा सोबती आदि।

प्रस्तावना, समकालीन समय में समान अधिकारों की समस्या,महिलाओं के जन्म से लेकर ही स्त्री–पुरुष में भेदभाव किया जाता है। बेटे के जन्म से मां–बाप खुश हो जाते हैं, किन्तु बेटी के जन्म के बाद गहरी निराशा व्यक्त की जाती है। नारी कितनी भी पढ़ी–लिखी क्यों न हो, उसे पुरुष के समान अधिकार प्राप्त नहीं होते। विधवा को पुरुष के समान दूसरी शादी के लिए मान्यता नहीं मिलती। विधुर को शादी करने से नहीं रोका जाता। जन्म देने वाली माता भी ऐसा भेद–भाव करती है। वह बेटी को बहुत सारे बंधनों में रखती है, लेकिन बेटे को पूर्ण रूप से छूट देती है। पुराने विचारों वाली माताएँ तो बेटी को शिक्षा क्षेत्र से भी वंचित करती है और उनकी शादी के बारे में सोचती हैं। इसी समाज व्यवस्था का लाभ पुरुष वर्ग उठाता है। वह पत्नी पर रौब जमाना चाहता है, परंतु आज की शिक्षित नारी स्वयं के अधिकार प्राप्ति के लिए लड़ती–झगड़ती है। प्रसंगबश वह तलाक भी ले लेती है। ऐसी ही समस्या का चित्रण नासिरा शर्मा का उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' में किया गया है। उपन्यास की नायिका महरूख बेटी होने के कारण उस पर बंधन डाले जाते हैं। महरूख की दीदी के स्त्री–पुरुष के बारे में विचार हैं। ''मर्द औरत एक गाड़ी के दो पहिए हैं, न कोई छोटा, न कोई बड़ा। बराबरी से ही गाड़ी जिंदगी की सड़क पर भागती है, वरना तो फिर किसी

एक को जिंदगी भर घसीटना पड़ता है।'' ये समानाधिकार के बारे में उच्च विचार हैं। नौकरी के क्षेत्र में महरूख के सामने समान अधिकार की समस्या निर्माण होती है। वह सोचती है कि पुरुष बिना शादी के अकेला रहकर नौकरी कर सकता है, परंतु स्त्री के लिए यह कठिन बन जाता है। महरूख की ताई के समान अधिकार के बारे में विचार हैं– ''मर्द सो गलती करें तो उन्हें माफी, औरत एक गलती करे तो उसके लिए पिस्तौल तैयार है। कभी सुना है, मर्द औरत के नाम पर बैठा हो मगर औरत एक मर्द के नाम पर जिंदगी तज देती है। सारी जिंदगी उसी के नाम की माला जपती रहती है।'' महरूख की नौकरानी लछमिनियां भी बेटे के सिवा बेटी को ही डांटती है तो महरूख इसका विरोध करते हुए कहती है। ''अपने लखिया को डांटा करो। वह तो गांव का राजा बना इस पेड़ से उस पेड़ पर उचकता रहता है उसे नहीं पढ़ना–लिखना है क्या? जो हरदम सुखिया के पीछे पड़ी रहती है?'' अतः यहाँ महरूख दोनों को समान अधिकार देना चाहती है। कृष्णा अग्निहोत्री का 'निष्कृति' उपन्यास में भी जोधाबाई को हिन्दू होते हुए भी पति धर्म अपनाना पड़ता है। बादशाह बहुत–सी रखैल लाता है, परंतु जोधा को सभी बर्दाश्त करना पड़ता है। मीरा के बारे में भी कहा है। ''देखा न लड़की है, उसकी इच्छा अनिच्छा की किसी को चिंता नहीं, बेटा होता तो पट्टे पर अपनी मर्जी बिना बैठता तक नहीं।'' अतः इसी भेद के कारण ही नारी के जीवन में समान अधिकार की समस्या निर्माण हो गई है। नारी में पराधीनता,नारी के पास आर्थिक स्वतंत्रता एवं अधिकार न होने के कारण उसे पराधीनता की समस्या का शिकार बनना पड़ता है। पराधीनता के कारण नारी अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पाती। अधिकतर वैवाहिक जीवन में नारी को पराधीन बनना पड़ता है। मायके में भी लड़कियों की अपनी इच्छा, आकांक्षाओं का दमन करना पराधीनता का ही लक्षण है। उषा प्रियंवदा का 'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास की राधिका पराधीनता का विरोध कर अपने अस्तित्व तथा स्वातंर्त्य की खोज में भटकती है। स्वाधीनता के बारे में वह पिताजी से कहती है। ''जो आप चाहते हैं वही हमेशा क्यों हो? क्या मेरी इच्छा कुछ भी नहीं? मैं आपकी बेटी हूँ, यह ठीक है, पर अब मैं बड़ी हो चुकी हूँ और मैं जो चाहूँगी वह करूँगी।'' इस उपन्यास में राधिका के माध्यम से स्वतंत्र रूप से अपना जीवन व्यतीत करने की बात की गई है। मन्नू भंडारी का 'स्वामी' उपन्यास में सौदामिनी शादी के बाद पराधीन बन जाती है। सास अपने ही विचार उस पर लादती है, परंतु मिनी इसका विरोध करती है। वह अन्याय–अत्याचार नहीं सहती। कृष्णा अग्निहोत्री का 'नीलोफर' उपन्यास में नीलम को इस प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ा। नीलम की सास उसे धर्म के अनुसार नमाज पढ़ाना, बुर्का ओढ़ना आदि के लिए बाध्य करने का प्रयास करती है। अतः नीलग को शादी के बाद पराधीन बनना पड़ता है। पराधीनता से मुक्ति पाने के लिए नीलम को संघर्ष करना पड़ता है। इसी प्रकार का साबिहा को भी पराधीनता का शिकार होना पड़ता है। पढ़ी–लिखी न होने के कारण वह पति पर निर्भर है। इसी कारण वह पति के अन्याय–अत्याचार सहती है। वह कहती है, ''मैं तो पढ़ी–लिखी नहीं। कुछ कमा भी नहीं सकती। ज्यादा बोलूंगी तो जोहरी इस्लाम को बीच में ले आयेगा कि मुसलमान को चार दिया ब्याज जायज हैं और वह खुलकर परबीन को घर ला सकता है।'' इस प्रकार उपरोक्त उपन्यासों में नारी को किसी न किसी वजह से पराधीनता का शिकार होना पड़ता है। आधुनिक युग में नारी स्वतंत्र होने के कारण अपने अहम के प्रति वह अधिक जागरूक बन गई है। ज्यादातर दांपत्य जीवन आर्थिक अभाव के कारण या अपने पति के जीवन में दूसरी स्त्री आगमन होने के कारण दाम्पत्य जीवन तनावपूर्ण हो जाता है। मेहरून्निसा परवेज का 'आंखों की दहलीज' उपन्यास में तालिया का दांपत्य जीवन मातृत्वहीनता के कारण तनाव पूर्ण बनता है। अपना घर

होते हुए भी उसे पराया लगता है। पति उसे सांत्वना देता है लेकिन वही नहीं मानती। वह अपनी व्यथा स्पष्ट करते हुए कहती है। ''उस नन्हीं बच्ची को देखो, शमीम जो अपनी छोटी–सी गुड़िया को लेकर सो जाती है। आज... आज वही नन्हीं सी बच्ची खुदा का सबसे बड़ा मजाक बन गई है।'' इसी में वह आत्महत्या का भी प्रयास करती है। स्पष्ट है कि दांपत्य जीवन बिगड़ने के लिए संतान का अभाव भी कारण बन गया है। नारी केन्द्रित उपन्यासों में समान अधिकार की समस्या विविध रूपों में चित्रित है। पत्नी को भी समान अधिकारों से वंचित रहना पड़ता है। जो नारी पढ़ी–लिखी है वह समान अधिकार के लिए संघर्ष करती दिखाई देती है। पतिवर्ग का तो विचार ही यह है कि पत्नी को अपने पत्नी रूप में ही रहना चाहिए। उसे समान अधिकारों की माँग नहीं करनी चाहिए। स्त्री नौकरी करके कमाती है फिर भी पुरुष स्वयं को ही श्रेठ मानता है। इसी अन्याय–अत्याचार के बीच लड़ती–झगड़ती नारी अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए सजग हो रही है प्रयत्नशील रही है। देश की स्वतंत्रता के बाद आर्थिक विषमताओं के कारण संयुक्त परिवार में विघटन की समस्या अधिकतर देखने को मिलती है। आर्थिक अभाव के कारण हो या पति के कुकर्मों के कारण हो या अन्य कारणों से ही परंतु नारी का पारिवारिक जीवन डाँवाडोल नजर आता है। ऐसी ही समस्या का चित्रण मृदुला जी का उपन्यास 'अनित्य' में भी दीर्घ की श्यामा की बीमारी के कारण पारिवारिक टूटन निर्माण हो जाता है। वह अकेलेपन से डरती है। अतः लड़कियों पर माँ के संस्कार नहीं होते शुभा और प्रभा बत्तमीज बनती हैं। श्यामा एक कमजोर औरत है। पिता जी ने तो अनेक औरतों से प्रेम के नाटक किए थे। इसी वजह से श्यामा का पारिवारिक जीवन टूट जाता है। पति के लिए उसके मन में कोई भी प्रगल्भ इच्छा नहीं। वह कहती है– ''यह घर टूट रहा है। टूट चुका है। छत गिर चुकी, फर्श फट कर रहेगा। कोई नहीं बचेगा यहाँ, कोई नहीं।'' पिता का स्वभाव तथा माँ की बीमारी, इन दोनों का फायदा लड़कियाँ लेती हैं और मनचाहे जैसा बर्ताव करती हैं। प्रभा तो माँ–बाप को अपनी शादी की खबर भी नहीं देती। अतः माँ–बाप के कारण पूरा परिवार टूट गया है। ममता कालिया का 'बेघर' उपन्यास में भी संजीवनी पारिवारिक समस्या का सामना करती है। वह नौकरी करती है इसीलिए उसे परिवार में भाभी की ओर से मान–सम्मान मिलता है। वह कहती है।''पिछले साल तक तो मैं घर पर थी। पर भाभी, माँ की दवाइयों का बिल देखकर मुँह बनाती थीं, तो मुझे बर्दाश्त नहीं हुआ।'' अतः घर की सारी जिम्मेदारी एवं परिवार में माँ की देखभाल भी उसे ही करनी पड़ती है। इसी उपन्यास के अंतर्गत पारिवारिक समस्या परमजीत की पत्नी रमा के स्वभाव के कारण निर्माण हो जाती है। रमा अनपढ़ होने के कारण पति की हर बातों का विरोध करती है और पति पर शंका भी करती है। अतः कंजूस स्वभाव की होने के कारण परिवार में असंतोष का वातावरण निर्माण हो जाता है। मन्नू भंडारी का 'आपका बंटी' उपन्यास में भी नारी के अहम के कारण पारिवारिक समस्या निर्माण हो गई है। पति को श्रेष्ठ न मानना, उसे सदा गिरने की आकांक्षा से पारिवारिक समस्या निर्माण हो गई है। तलाक से पहले ही वह पति से अलग रहती है। इस पारिवारिक समस्या का शिकार बेटे को भी होना पड़ा है। पति का दूसरी युवती के साथ घर बसाने और पत्नी शकुन को तलाक देने के कारण यह परिवार पूर्ण रूप से बिखर जाता है। दोनों अपने–अपने मार्ग पर चले जाते हैं और इस प्रकार पारिवारिक जीवन तहस–नहस हो जाता है।

निष्कर्ष, अभिषेक' उपन्यास में वेणु उद्योग शील नारी है, परंतु विधवा होने के बाद सामाजिक समस्या का सामना करना पड़ता है। है। विधवा होने के कारण उस पर समाज के लोग शक करते हैं। एक सुंदर विधवा स्त्री जब

व्यवसाय में लगी रहती है तो पुरुष वर्ग उसकी ओर वासना की दृष्टि से देखता है। उसके सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है– ''कुछ भी कहो वेणु सादगी में भी सुंदर लगती है। सूनी गाँग... सूना माथा भी उसके लावण्य को फीका नहीं कर पाते।'' अधीर की माँ तो कहती है– ''तूने तो कभी नहीं बताया कि ये इतनी कम उम्र की है।'' अतः यहाँ भी समाज में उसको स्थान नहीं मिलता। इसी उपन्यास की लीला बंसोड़ निम्न जाति की होने के कारण नौकरी के क्षेत्र में समाज के लोगों से भली–बुरी सुनती है। वह कहती है। ''उधर टाइपिस्ट तो पन्नालाल मुझे रोज तंगाते हैं कि अरी नखरे मत दिखा, तेरी जाति वालों को खूब जानता हूँ।'' अतः स्पष्ट है कि नारी के लिए निम्न जाति में जन्म लेना भी सामाजिक दृष्टि से बड़ा अभिशाप है। अतः स्पष्ट है कि निम्न जाति की नारियों को समाज में कुछ भी स्थान नहीं। यामिनी कथा' उपन्यास में यामिनी का पारिवारिक जीवन एक अंसफल पत्नी और माता के रूप में है। वह अपने पति विश्वास से बहुत प्यार करती है, फिर भी वह उसे कभी भी नहीं मिलता। उसका जीवन अपने पति विश्वास के बिना अधूरा रह जाता है। उसे विश्वास से प्यार भरी थपकी या आश्वस्ति नहीं मिली थी और उसी वजह उसका जीवन घुटनभरा हो जाता है। वह सोचती है,''तुमने तो कहा था–मुझे कभी किसी बात की कमी नहीं होगी। ऐसा मेरा इस शोध पत्र के माध्यम से एक प्रयास रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 अनित्य, मृदुला गर्ग, पृ0 224
2 बेघर, ममता कालिया, पृ0 48
3 अभिषेक, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ0 49
4 अभिषेक, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ0 187
5 रुकोगी नहीं राधिका, उषा प्रियंवदा, पृ0 43